International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 9, Issue 03, March 2022
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

एक परिशीलन खत्म होती बाल पत्रिकाएँ

डॉ. कुलदीप सिहँ, असिस्टेंट प्रोफेसर,
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग,
सनराईज विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

DOI:aarf.ijhrss.33265.22132

प्रस्तावनाः— बच्चा समाज की महत्त्वपूर्ण इकाई है । उसे समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी बनाना महत्वपूर्ण दायित्व है। इसमें बाल साहित्य की भूमिका को कमतर नहीं आंका जा सकता। इसका सबसे महत्त्वपूर्ण स्रोत बाल पत्रिकाएँ हैं। इनके माध्यम से बालक को चेतनासम्पन्न और विषयों के प्रति संवेदी बनाने में सहायता मिलती है । बाल पत्रिकाओं में प्रकाशित साहित्य के माध्यम से बालक वर्ग में सूझबूझ पैदा की जा सकती है और किस्से—कहानियो के जरिये उन्हें नैतिक व सामाजिक दायित्वबोध कराया जा सकता है । बाल वर्ग के लिखे गए साहित्य की श्रेणी विशिष्ट होती है। विलियम स्मिथ के शब्दों में – यह आवश्यक नहीं है कि बच्चों के लिए लिखी गई सभी पुस्तकें बाल साहित्य ही हों और न ही यह आवश्यक है कि बड़े लोग, जिसे बाल साहित्य मानते हों, बाल रुचि के अनुसार चुनी गई पुस्तकें उस कसौटी पर खरी उतर जाएं । ऐसे भो लोग हैं, जो बड़ों की बातों का सरल ढंग से विवेचन बाल साहित्य मानते हैं, लेकिन यह विचार बच्चों को बड़ों का सूक्ष्म संस्करण सिद्ध करता है और वास्तव में यह गलत धारणा बचपन द्वारा उत्पन्न की गई है । बच्चे वास्तव में ऐसी जाति होते हैं, जिसमें जीवन के मूल्य बाल सुलभ मनोवृत्ति के आधार पर निर्भर होते हैं, बड़ों की मनोवृत्ति पर नहीं।" विलियम स्मिथ ने बालकों की मनोवृत्ति की भिन्नता और बाल वर्ग की अंभिरुचियों को विशेष दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है ।

भूमिकाः—बाल पत्रिकाओं के इस महत्त्व के बावजूद वर्तमान दौर बाल पत्रिकाओं के प्रतिकूल होता जा रहा है। देश की स्वतंत्रता के पश्चात जिस तीव्रता से बाल पत्रिकाओं का प्रकाशन शुरू हुआ था, अब वह उतना ही मंद पड़ गया है। नई बाल पत्रिकाओं का प्रकाशन तो दूर की बात पुरानी बाल पत्रिकाएं दम तोड़ती जा रही हैं । जितनी बाल पत्रिकाओं का 1947 के बाद से पंजीकरण हुआ, उनमें से आधे से ज्यादा बंद हो चुकी हैं । चंपक, नंदन, ननहें सम्राट, बाल हंस बलरामा, जूनियर विकेतन जैसी जिन बाल पत्रिकाओं ने बालकों के दिलों में गहरी जगह बनाई थी, वह भी संघर्ष करती प्रतीत

© Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

होती हैं । तेजी सें इन बाल पत्रिकाओं का ग्राफ गिरता जा रहा है । बढ़ने की बजाय इनका प्रसार भी सिकुड़ता जा रहा है । टेलीविजन, कार्टून चैनल, इंटरनेट, वीडियो गेम्स, मोबाइल फोन और वर्चुअल गेम्स ने बालकों की प्रवृत्तियों और अभिरुचियों को बुरी तरह से प्रभावित किया है । वर्तमान में बच्चे बाल पत्रिकाओं से बहुत तेजी से विमुख होते जा रहे हैं । स्कूली किताबों के बोझ के बाद वह पढ़ने की प्रवृत्ति से उदासीन होने लगे हैं और मनोरंजन के नाम पर इलेक्ट्रॉनिक्स माध्यम उनकी पसंद बन गए हैं। फलस्वरूप बाल पत्रिकाए अब प्रसार में पिछड़ने लगी हैं ।

वस्तुतः बाल पत्रिकाएं विभिन्न विस्तृत पक्षों को सार के रूप में बच्चों के सामने प्रस्तुत करती हैं और बच्चे उसमें से अपनी रूचि के अनुसार तथ्य ग्रहण करते हैं । बाल पत्रिकाएं बच्चों की समझ विकसित करती हैं । इससे उनकी कल्पनाशीलता का विकास होता है। बालक अपने परिवेश के परिदृ श्यों में अधिक रूचि लेने लगते हैं और मन में उठने वाले प्रश्नों के उत्तर खोजने लगते हैं । इसी अवस्था में बच्चों की श्रव्य और दृश्य दोनों ही शक्तियाँ विकसित होती हैं । बाल पत्रिकाएं बच्चों में सहज उत्सुकता उत्पन्न कर उनकी जिज्ञासाओं को तृप्त करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है । बाल साहित्य बाल पत्रिकाओं का मूल तत्त्व है । बाल साहित्य की भाषा कठिन नहीं होनी चाहिए।" हिन्दी बाल साहित्य की परम्परा बहुत समृद्ध है। बाल पत्रिकाओं में सम्मिलित किए गए बाल साहित्य के अंतगत वह समस्त साहित्य आता है, जिसे बच्चों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर लिखा गया हो । बाल पत्रिकाओं के साहित्य में रोचक कहानियां प्रमुखता से सम्मिलित की जाती हैं। बाल सुलभ कविताएं बच्चों को सरलता से ग्राह्मा बातो है । प्रयोगों पर आधारित कहानियाँ बाल पाठकों को वैज्ञानिक सूझ–बूझ देती हैं । किन्तु वर्तमान में बाल पत्रिकाओं के प्रति अभिभावकों में भो उदासीनता का भाव आया है। बच्चों को बाल पत्रिकाएं पढ़ने के लिए ज्यादा प्रेरित भी नहीं किया जाता। परिणाम स्वरूप काफी बाल पत्रिकाओं का प्रकाशन बंद हो चुका है और बहुत सी बाल पत्रिकाएं प्रसार के संकट से जूझ रही हैं।

बाल पत्रिकाओं का इतिहास

हिंदी बाल साहित्य का आरंभ महाकवि सूरदास के बाललीला गायन के पदों से माना जाता है। डॉ. हरी कृष्ण देव सरे ने हिन्दी बाल साहित्य का अविर्भावकाल भारतेंदु युग को सिद्ध करते हुए लिखा है, 'भारतेंदु युग में, सन् 1874 में 'बाल बोधिनी' पत्रिका का प्रकाशन एक ऐसी ऐतिहासिक घटना है, जो यह प्रमाणित करती है कि बाल वर्ग के लिए भी पृथक साहित्य लिखा जाना आवश्यक समझा गया था। 'राजा शिव प्रसाद सितारेहिंद ने बच्चों के लिए ज्ञान–विज्ञान की पुस्तकों के अलावा मनोरंजन प्रधान पुस्तकें भी लिखी। राजा भोज का सपना 'इनमें सबसे महत्वपूर्ण है । बाल पत्रिका 'नंदन' के पव संपादक जय प्रकाश भारती ने सन् 1623 में जटमल द्वारा लिखित 'गोरा बादल की कथा' को बाल साहित्य की आदी पुस्तक माना है। बाबू ने 'बाल सखा' (अक्तूबर 1945 ई. पृ. 320) के माध्यम से यह बात बाल पाठकों तक पहुंचाई । पंडित लल्ली प्रसाद पांडेय, पंडित माखन लाल चतुर्वेदी, आरसी सिंह,

© Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

सोहन लाल द्विवेदी, भगवती प्रसाद वाजपेयी, बाबू लाल भार्गव, गौरी शंकर लहरी, पंडित कुंज बिहारी लाल चौबे, राय बहादुर लज्जा शंकर झा आदि बाल साहित्यकार हुए हैं। स्वतंत्रता से पूर्व की अवधि में विषय और शैली की दृष्टि से बाल साहित्य पयाप्त सम्पन्न बना। 'बाल सखा' के सम्पादक के रूप में लल्ली प्रसाद पांडेय ने बाल साहित्यकारों की एक लंबी श्रृंखला तैयार की । इस दौरान बाल पत्रिकाओं में मनोरंजन तत्त्व के अतिरिक्त राष्ट्रीयता, बाल–मन, नैतिकता, प्रकृति, वीरता, साहस जैसे विषय भी रचनाओं के माध्यम से सम्मिलित हुए। स्वतंत्रता के पश्चात् सरकारी व गैर सरकारी क्षेत्र में बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं की पुस्तकों का प्रकाशन हुआ। भारत सरकार के प्रकाशन विभाग से 'बाल भारती' बाल पत्रिका शुरू हुई । इसी अवधि में 'पराग' और 'नंदन' जैसी पत्रिकाएं अस्तित्व में आई । 'जादू की डिबिया, 'जादू की चिड़िया' जैसे शीर्षकों से रोचक कहानियाँ बच्चों के सामने आई। इस दौरान बाल उपन्यास विधा का भी आरंभ हुआ। विभिन्न प्रकाशनों ने बच्चों के लिए पत्रिकाओं का प्रकाशन शुरू किया। विभिन्न भाषाओं में देशभर से पत्रिकाएं प्रकाशित होनी शुरू हुई, लेकिन तेजी से अब बाल पत्रिकाओं का प्रसार कम होता जा रहा है और कइयों का प्रकाशन बंद हो गया है।

बाल पत्रिकाओं का प्रादुर्भाव

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश में बाल साहित्य के प्रति उत्साह उभरा और तेजी से बाल पत्रिकाओं का प्रकाशन शुरू हुआ। 1947 में सबसे पहले इलाहाबाद से शेर बच्चा बाल पत्रिका का पंजीकरण हुआ । यह पत्रिका इलाहाबाद से प्रकाशित होती थी, लेकिन कालांतर में इसका प्रकाशन बंद हो गया। 60 का दशक पूरा होते–होते देश में 43 बाल पत्रिकाओं का पंजीकरण हो गया, किन्तु इनमें से कई पत्रिकाएँ बंद भी होती चली गई । 1998 तक कुल 86 बाल पत्रिकाओं का पंजीकरण हुआ, जिनें से एक तिहाई से ज्यादा 28 बाल पत्रिकाओं का प्रकाशन उत्तरप्रदेश से होता था और उसके बाद दूसरे स्थान पर दिल्ली से 26 बाल पत्रिकाओं का प्रकाशन शुरू हुआ।

एवरेज इश्यू रीडरशिप के अनुसार 2011 की दूसरी तिमाही में बाल पत्रिकाओं का प्रसार

चंपक	8 लाख 73 हजार
बलवान	8 लाख 8 हजार
नंदन	5 लाख 64 हजार
बाल हंस	4 लाख 48 हजार
नन्हें सम्राट	4 लाख 6 हजार
छोटू मोटू	3 लाख 46 हजार
विज्डम	3 लाख 9 हजार
बलरामा डाइजेस्ट	3 लाख 7 हजार
जूनियर विकेतन	2 लाख 95 हजार
बाजभूमि	2 लाख 93 हजार

1. चंपक पत्रिका – चंपक टॉप पर बनी हुई है। इसके पाठकों की संख्या 2011 में दूसरी तिमाही के अनुसार 8 लाख 73 हवार रह गई है, जबकि 2009 के राउंड वन में इसके पाठकों की संख्या 9 लाख 6 हजार थी। इस तरह से चंपक के पाठकों में दो वर्ष की तुलना में चार प्रतिशत की कर्मी दर्ज की गई है ।

2. बलवान पत्रिका – बलवान को दूसरे स्थान पर सबसे अधिक पाठकों की कमी झेलनी पड़ी है । सा 2009 के राउंड वन ग्रेजहां इसके पाठकों की संख्या 14 लाख 35 हजार थी वहीं 2010 के दूसरे तिमाही में यह 33 प्रतिशत घटकर 12 लाख 21 हजार हो गई और 2011 के दूसरे तिमाही में इसमें और कमी आई एवं यह संख्या घटकर 8 लाख 18 हजार ही रह गई ।
3. नंदन पत्रिका – तीसरे स्थान पर है । जहां 2009 में इसके पाठकों की संख्या 7 लाख 35 हजार थी वहीं 2011 के दूसरे तिमाही में यह संख्या 5 लाख 64 हजार रह गईं है। 2010 के दूसरे तिमाही में इसके पाठका की संख्या 6 लाख 93 हजार थी।
4. बाल हंस – चौथे स्थान पर है । इसके पाठकों की संख्या में एक वर्ष के अंदर 12 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है । 2009 के राउंड वन में इसके पाठकों की संख्या 3 लाख 99 हजार थी वहीं 2011 के दूसरे तिमाही में यह आंकड़ा 4 लाख 48 हजार हो गया।
5. नन्हें सम्राट– 2011 के दूसरी तिमाही के एवरेज इश्यू रीडरशिप के अनुसार 4 लाख 6 हजार पाठकों के साथ पांचवें पायदान पर कायम है।
6. छोटू–मोटू – की सूची में छठे स्थान पर कामय है।एक साल के अंदर इसके पाठकों की संख्या में 45 हजार की बढ़ोत्तरी दर्ज हुई है वहों दो वर्षों के अंदर पाठकों की संख्या में 1 लाख 48 हजार की बढ़ोत्तरी दर्ज करने में यह पत्रिका कायम रही है। 2011 के दूसरे तिमाही के अनुसार इसके पाठकों की संख्या 3 लाख 46 हजार हो गई है।
7. विज्डम पत्रिका – सातवें स्थान पर कायम है। इसके पाठकों की संख्या में दो वर्ष की तुलना में 32 प्रतिशत कमी आई है 2009 के राउंड वन में जहां इसके पाठकों की संख्या 4 लाख 55 हजार थी वहीं 2010 के दूसरे तिमाही में यह घटकर 4 लाख 22 हजार और 2011 के दूसरे तिमाही में 'एवरेज इश्यू रीडरशिप' के अनुसार 3 लाख 9 हजार रह गई है।
8. बलरामा डाइजेस्ट –आठवें स्थान पर है । इसके पाठकों की संख्या में एक वर्ष के भीतर 'एवरेज इश्यू रीडरशिप' के अनुसार 9 प्रतिशत की कमी आई है । 2010 के दूसरे तिमाही में जहां इसके पाठकों की संख्या 3 लाख 37 हजार थी वहीं 2011 की दूसरी तिमाही में यह घटकर 3 लाख 7 हजार रह गई।
9. जूनियर विकेतन – नौवें स्थान पर है और वर्ष 2011 के दूसरे तिमाही में 'एवरेज इश्यू रीडरशिप' के मुताकि इसके पाठकों की सख्या 2 लाख 95 हजार रह गई है ।
10. बालभूमि – दसवें स्थान पर है। 'एवरेज इश्यू रीडरशिप' के अनुसार इसके पाठकों की संख्या 2 लाख 93 हजार रह गई है। इसके पाठकों की संख्या में एक वर्ष के अंदर सबसे तेजी से कमी आई है और दो वर्षों के अंदर पाठक की संख्या में 41 प्रतिषत की कमी हुई है।

निष्कर्ष:— टेलीविजन, कार्टून चैनल, वीडियो गेम्स, वर्चुअल गेम्स और मोबाइल फोन ने बच्चों की दुनिया को बदल कर रख दिया है। मनोरंजन के प्रति बालक वर्ग की अपेक्षाएँ पूरी तरह से बदल गई हैं । बच्चों मे साहित्य पढ़ने की अभिरुचियां विकसित नहीं हो पा रहीं । वो दौर अब नहीं रहा, जब बच्चे घंटों बाल पत्रिकाओं में रमें रहते थे। अब बच्चों के स्कूली बस्ते में बढ़ती किताबों की संख्या व उपलब्ध रोचक मनोरंजन माध्यमों ने बाल कि प्रति उनके दृष्टिकोण में बदलाव ला दिया है । इसका दुष्परिणाम बाल पत्रिकाओं के प्रसार पर पड़ रहा है । प्रस्तुत शोध में सामने सायाः सर्वोच्च दस प्रसारित बाल पत्रिकाओं में से केवल एक बाल हंस को छोड़कर सबके प्रसार में या तो गिरावट दर्ज की गई है या फिर उनके प्रसार में ठहराव आ गया है । बाल भूमि के प्रसार में दो साल में 41 प्रतिशत की गिरावट, सर्वाधिक प्रसारित चंपक पत्रिका को भरी चार प्रतिशत की गिरावट झेलनी पड़ी है। बलवान पत्रिका को करीब सवा साल के अंतराल में 33 फीसदी की गिरावट का सामना करना पड़ा। फलस्वरूप यह प्रमाणित हो गया है कि सूचना की तीव्रता और इयर नको बहुलता के दौर में बाल पाठक बाल पत्रिकाओं के प्रति उदासीन होते जा रहे हैं और बाल पत्रिकाएं दम तोड़ती जा रही हैं।

संदर्भ सूची

1. चड्ढा, सविता, नई पत्रकारिता और समाचार लेखन, तक्षशिला प्रकाशन, 23/4762, असारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली
2. श्रीवास्तव, डॉ. डी. एन., अनुसंधान विधियां, साहित्य प्रकाशन, आागरा–3
3. जैन, प्रो. रमेश, 2003, जनसंचार एवं पत्रकारिता, मंगलदीप पब्लिकेशन, जयपुर
4. http://www.mediasarkar.com, 21 October-2011
5. www.google.com
6. www.auditbureau.org